रविवार दिनाँक 03-03-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

किश्ती तैयार किश्ती तैयार।

महाबीर दियां दासियां, चढ़ो ते उतरो समुन्द्रों पार।

पंज तत्त घर अपने जाओ जीव विचारे तों उतरम भार उतरम भार।

महाबीर दियां दासियां, चढ़ो ते उतरो समुन्द्रों पार।

सजनों यह सुनकर हम सबके मन में प्रसन्नता का वातावरण बनना चाहिये क्योंकि हम में से अधिकतर सजन, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते भवसागर से पार होने हेतु इस किश्ती में सवार हैं। निश्चित रूप से इस भवसागर से पार होने के लिये, उनके वचनों के रूप में जो किश्ती आगे बढ़ रही है, हमें उनकी निरन्तर पालना करनी होगी ताकि हमारी जीवन-यात्रा निर्विघ्न अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाये।

इस सन्दर्भ में ज्ञात हो कि सर्वप्रथम तो किश्ती में सवार होने के लिये हमें कुछ नीति-नियमों को स्वीकारना होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि अगर हम उन नियमों के विपरीत कुछ करते हैं तो किश्ती के डावाँ-डोल होने का यानि कुछ भी अनुचित घटने का भय बना रहता है। ऐसा न हो इस हेतु सजनों हमें सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के निर्देशन में, निर्भय होकर, उनके नियमों की पालना करना स्वीकारना है। निश्चित रूप से ऐसा करने से हम सफलता को प्राप्त कर सकते हैं और हमारा बेड़ा पार हो सकता है। कहने का आशय सजनों यह है कि केवल इतनी सी सावधानी, इतनी सी मानसिक स्थिरता अपनाने से जीवन का सबसे बड़ा कार्य सिद्ध हो सकता है। इस कार्य को सिद्ध करने हेतु सजनों समर्पित भाव में आओ और इस यात्रा के दौरान जो नियम, नीति बताई जाए, उसका स्थिरता से पालन करना आरम्भ कर दो। इसी संदर्भ में अब ध्यान से सुनोः-

चलो चलो नी प्यारी चल रचना देखें, बलधारी सिंघासन सजाया ए।।

खीर समुंद्र विच टापू दे, इक जगमग मन्दिर बनाया ए।।

इन्हां मन्दिरां विच महाबीर जी साजन, लक्ष्मण चंवर झुलाया ए।।

इन्हां मन्दिरां विच रघुनाथ जी साजन, लक्ष्मण चंवर झुलाया ए।।

शिव ब्रह्मा वी जिसदा सिमरन करदे, शेष गणेश वी अन्त न पाया ए।।

देवी देवते दर्शन नूं आवन, नारद जी बीन बजाई ए।।

अनाहद वाजे दी झनकार जो आवे, महाबीर जी ने रचना रचाई ए।।

ऋषि मुनि बली जा दा अन्त न पावन, बेअन्त महाबीर रघुराई ए।।।

चरणां विच महाबीर जी साजन, सिंघासन ते साजन रघुराई ए।।

स्वर्ग विचों अप्सरां नाचन नूं आवन, मन्दिर दी शोभा लखी न जाई ए।।

देवी देवते फुल बरसावन, महाबीर जी ने रचना रचाई ए।।

चलो नी सारियां दासियां हथ जोड़ के, महाबीर जी अग्गूं सीस निवाइये।।

सजनों इस भजन द्वारा सच्चेपातशाह जी आवाहन देते हुए कह रहे हैं कि हे जीवो ! कलुकाल के अन्धकार को विध्वंस करने हेतु भगत शिरोमणि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने एक ऐसी अद्भुत रचना रचाई है जिसके तहत् उन्होने क्षीर समुन्द्र विच टापू के एक जगमग मन्दिर बना दिया है। अब उस अद्भुत रचना को देखने के लिये तीनों लोकों से सजन, शिव, ब्रह्मा, नारद, शारद सब पधार रहे हैं। जब सब पधार रहे हैं तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते वे कहते हैं कि हे जीवो, आप सब भी चलो। इस सन्दर्भ में मानो कि यह क्रिया ख़्याल को दुनियाँ की तरफ से मोड़कर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार अपने यथार्थ अस्तित्व आत्म-स्वरूप की ओर मोड़ने की क्रिया है जोकि अपने आप में प्रसन्नताप्रदायक यानि भाग्य उदय की सूचक है। अब उन परमश्रेष्ठ का आवाहन सुनकर, हम कहना मान अपना भाग्य जगाने के प्रति आगे बढ़ते हैं या नहीं, यह खुद पर निर्भर करता है। याद रखो जो रुके रहते हैं वह हार जाते हैं व अज्ञानमय अवस्था में उलझे रहते हैं। इसके विपरीत जो उनके हुक्म के आगे अपना तन-मन-धन सब अर्पण कर देते हैं, वह जीत जाते हैं यानि उनका बेड़ा पार हो जाता है क्योंकि वह अपनी यथार्थता को जान जाते हैं और साथ ही जीव-जगत का जो खेल है उसे भी जान जाते हैं और ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाते हैं। समझ आई बात?

हाँ जी।

जानो इस द्वारे पर कोई लम्बी या कठिन भक्ति नहीं है। इसीलिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि हे इन्सान, इस संक्रमण काल में जब कलियुग सतयुग में प्रवेश करने जा रहा है, बाल्य-अवस्था के सभी आडम्बरयुक्त भक्ति भाव त्याग दे और शब्द गुरु मानकर, युवा-अवस्था का भक्तिभाव अपना ले। इस तरह समभाव-समदृष्टि होकर दिव्यता के प्रतीक बन जा। याद रख दिव्यता का प्रतीक बनने के लिए किसी शारीरिक गुरु की आवश्यकता नहीं है क्योंकि शरीर तो अपने में उलझाकर अपने आगे झुकाते हैं। अतः हमें शरीरों के आगे कदापि नहीं झुकना और न ही उनके साथ जुड़ना है बल्कि हमने तो दुनियाँ से आज़ाद रहना है और अपनी स्वतन्त्रता पर किसी विध् भी दाग नहीं लगने देना।

इस संदर्भ में कामयाब होने हेतु सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जो परम आज्ञाएँ हैं उनका स्वतन्त्र बुद्धि इंसान की तरह यथा पालन करना है यानि तद्नुरूप जीवन-यापन करना आरम्भ कर देना है और निष्पाप जीवन जीते हुए अन्त अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पा जाना है। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों वचनों की अवज्ञा करना छोड़ दो क्योंकि यह स्वभाव हार का प्रतीक है। जानो जानबूझ कर भी जो सजन अपने लिये हार का चुनाव करता है वह मूर्ख व अहंकारी होता है। अन्य शब्दों में वह सजन सार्थक जीवन जीने की कला से अनिभिज्ञ होता है इसलिए एक मृत की भान्ति केवल और केवल निरर्थक जीवन जीता है। आपके साथ ऐसा न हो इस हेतु सजनों आप सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के तेज और बल को देखो और उनके वचनों की पालना करते हुए वैसे ही ओजस्वी व तेजस्वी बन जाओ। ऐसा करने से मौत के भय से मुक्त हो जाओगे और जो भी करोगे सुकर्म ही करोगे। यही सजनों सफलता का राज है। अब आगे कीर्तन सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

जनता डिगदी जांदी देख सूरत भगवान दी।

जनता पई हर्षांदी ओ देख सूरत भगवान दी।।

(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

सतवस्तु दी जनता आई होई ए, ओ-ओ-ओ।

भगवान बैठे जब कुर्सी ते जनता कई उमड़ उमड़ाई होई ए।।

कलुकाल ख़तम होने वाला जे ओ-ओ-ओ।

सतवस्तु आई मिले वधाई ओ सतवस्तु आई।।

सतवस्तु दी जनता देखो ओ-ओ-ओ।

ओहदी चाल रसम नूं देखो ओ-ओ-ओ।

सतवस्तु दी जनता देखो कैसी है रौशनाई।।

कलुकाल ख़तम होने वाला जे ओ-ओ-ओ।

सतवस्तु आई मिले वधाई ओ सतवस्तु आई।।

सतवस्तु दी चमक नूं देखो ओ-ओ-ओ।

कैसी ओहदी है रौशनाई ओ-ओ-ओ।।

सतवस्तु में चौरासी दग्ध भस्म हो राहसी मौत न दिस्से काई।

कलुकाल ख़तम होने वाला जे ओ-ओ-ओ।

सतवस्तु आई मिले वधाई ओ सतवस्तु आई।।

सतवस्तु में इक चतुर्भुजधारी ओ-ओ-ओ।

लक्ष्मी है ओ शरण तुम्हारी ओ-ओ-ओ।

ओही लक्ष्मी है सर्व सबाई, चतुर्भुजधारी दी है शरणाई।।

कलुकाल ख़तम होने वाला जे ओ-ओ-ओ।

सतवस्तु आई मिले वधाई ओ सतवस्तु आई।।

सतवस्तु विच सच्च दी पट्टी ओ-ओ-ओ।

सतवस्तु विच हृदय सच ओ-ओ-ओ।

सच्च खण्ड में जोत है निरंकार दी, आद अन्त चली आई।।

कलुकाल ख़तम होने वाला जे ओ-ओ-ओ।

सतवस्तु आई मिले वधाई ओ सतवस्तु आई।।

हनुमान जी दे बल नूं देखो ओ-ओ-ओ।

और ओन्हां दी ताकत देखो ओ-ओ-ओ।

ओन्हां मुकम्मल बात बताई ओ सतवस्तु आई।।

कलुकाल ख़तम होने वाला जे ओ-ओ-ओ।

सतवस्तु आई मिले वधाई ओ सतवस्तु आई।।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों सतवस्तु में प्रवेश पाने हेतु आप भी अपने अन्दर प्रबल इच्छा पैदा कर बधाई के पात्र बनो। इस प्रयोजन में सफलता प्राप्त करने हेतु सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने जो युक्ति प्रदान की हुई है उसके बारे में हम आज एक बार फिर आपको बता रहे हैं ताकि आपकी अक्ल टिकाणे आ जाये। जानो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे की युक्ति है - 'ख़्याल ध्यान वल, ध्यान प्रकाश वल' करो। ऐसा न हो कि ख़्याल ध्यान वल और ध्यान नश्वर संसार वल हो जाए। सजनों यदि ऐसा होता है तो समझ लेना कि निश्चित ही आप नश्वरता धारण कर रहे हो। इसके विपरीत अगर ख़्याल ध्यान वल और ध्यान प्रकाश वल रहता है तो मानो कि आप अपने आत्म-स्वरूप को धारण कर रहे हो और आपका हृदय प्रकाशमान हो रहा है। वह कहते हैं - ख़्याल ध्यान वल और ध्यान आत्म-स्वरूप की तरफ इस तरह स्थिर रखो कि जो अनहद नाद, सार्थक ध्वनि हर हृदय में गुन्जायमान है, उसके प्रभाव से आत्मिकज्ञान का प्रवाह आपके हृदय में प्रवाहित हो उठे। जान लो यदि ऐसा हो गया तो फिर बाहर कुछ किताब आदि पढ़ने की जरुरत नहीं रहेगी।

आशय यह है कि यह सारी व्यवस्था कुदरत ने आपके अन्दर ही स्थापित कर रखी है पर हमें केवल अन्तर्ध्यान होने की आवश्यकता है। युगों से हमारा जो ध्यान दुनियाँ की तरफ बिखर गया है, उसको समेटकर अपने सच्चे घर में स्थित करने की परम आवश्यकता है। सजनों क्या यह कोई लम्बी युक्ति है जो हमें याद नहीं रहती।

मौन।

जानो यह हमें याद इसलिए नहीं रहती क्योंकि हम अपने ख़्याल को प्रकाश में स्थित रखने का अभ्यास नहीं करते। ऐसे में हमारा मन-मन्दिर किस प्रकार प्रकाशित हो सकता है? जब मन-मन्दिर ही प्रकाशित नहीं होगा तो मन-मन्दिर में विराजमान आत्मा में जो परमात्मा है, उसका साक्षात्कार कैसे होगा? उसका साक्षात्कार नहीं होगा तो हम अपनी यथार्थ गुण-शक्ति और जो हृदय-शक्तियाँ होती हैं उनको पहचान कैसे कर सकेंगे। जानो उनकी पहचान तो प्रयोग द्वारा बनती है और यदि एक बार प्रयोग द्वारा पहचान बन जाये तो फिर इन्सान अपने आप को उससे विलग करने की चेष्टा नहीं करता। ऐसा शुभ होने पर जो 'काम' मन में सुप्त अवस्था में होता है वह जाग्रत नहीं होता। जब 'काम' नहीं जागता तो कोई भी कामुक-भावना अन्दर पैदा नहीं होता। इसके विपरीत 'काम' जाग्रत होता है तो यह भी ले ले, वह भी ले लो, सब कुछ ले लो, एक प्रकार की होड़ सी लग जाती है। ऐसे में जब मन-वांछित प्राप्त नहीं होता तो क्रोध उत्पन्न होता है और यदि मनोवांछित फल मिल जाए तो लोभ और मोह पैदा हो जाता है। इस प्रकार संसारी धन या पदार्थ प्राप्त कर अहंकार सिर चढ़ जाता है और इंसान इस अवस्था में किसी को कुछ भी नहीं समझता।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों 'ख़्याल ध्यान वल, ध्यान प्रकाश वल', इस युक्ति का महत्त्व समझ आ जाना चाहिये। ऐसा करने से ही हृदय सत्य से प्रकाशित हो सकेगा और हम रजोगुण-तमोगुण से मुक्त हो निर्विकारी अवस्था में बने रह सकेंगे। निर्विकारी हो गए तो हमारी विवेकशक्ति इतनी सक्रिय हो जायेगी कि फिर हम कुछ भी बुरा धारण नही करोगे और सत्यता के प्रतीक बन जाएंगे। यहाँ जानो कि सत्य क्या है ? - सत्य हे ईश्वर। ईश्वर क्या है? -सत्य। इस तरह आप सत्य के प्रतीक हो गये तो सम हो गये और उस अवस्था में कह उठोगे कि मैं ही ईश्वर हूँ और ईश्वर ही मैं हूँ। फिर द्वि-द्वेष, लड़ाई-झगड़े, तेरी-मेरी सब समाप्त हो जाएंगे। यही सतयुग में होने वाला है। अब कलुकाल सिमटने वाला है, इसका अर्थ है कि जितने भी आपने, हमने, सब संसार के मानवों ने कलुषित भाव-स्वभाव अपना लिये है वह सब खत्म होने वाले हैं और प्रत्येक के हृदय में सत्य प्रकाशित होने वाला है। ऐसा ही हो, उसी के लिये यह सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ धरा पर आया है। अतः इस ग्रन्थ के विचारों को पकड़ते जाओ और सुधरते-सँवरते हुए अपना आत्म-उद्धार कर लो। यह सीधी और स्पष्ट बात है। अन्यथा आज जिस शरीरी सुन्दरता को देखकर अकड़ते हो, अहं भाव में आते हो, वह सब धरी की धरी रह जायेगी। बाहर से सजना-सँवरना अनुचित नहीं है पर अन्दर से भी बिखरो नहीं यानि अन्दर भी नकारात्मकता न हो और आपका अन्तःकरण विशुद्धता का प्रतीक हो। यदि आपका अन्तःकरण विशुद्धता का प्रतीक है तो वाणी भी सत्यता की प्रतीक होगी और आपके विचार भी सत्यता के प्रतीक होंगे। सजनों इसका सद्परिणाम यह होगा कि जो मन आपसे परेशान है और आपको भी परेशान करता है, वह प्रसन्न और शान्त हो जायेगा और शान्त होने पर आपका सजन मित्र बन जायेगा। अब सजनों मन को मित्र बनाना अपने हाथ में है। मन को हाथ में करने का अर्थ है मन को जीत लेना। जब मन जीत लिया तो वो आपका मीत बन गया क्योंकि जीत ही मीत है। अतः मन को मीत बनाने के लिये उसे ब्रह्म शब्द विचारों की खुराक दो, आहार दो। ऐसा करने से वह आपका मीत बन जायेगा और आपको अमरता का यानि जीव सदा अमर है और शरीर नश्वर है, इसका भान हो जायेगा। तत्पश्चात शरीरों के नाश होने पर आपको दुःख नहीं होगा क्योंकि तब आप समझ जाओगे कि यह तो कुदरत का नियम है और उसी नियमानुसार ही यह क्रिया चल रही है। तब आप मानसिक रूप से हर परिस्थिति में एक अवस्था में सधे रहोगे। कहने का मतलब यह है कि आप उस विचार कि 'ईश्वर है अपना आप' पर स्थिरता से खड़े रहोगे और अमीरों के भी अमीर हो जाओगे। अब ध्यान से यज्ञ का निमन्त्रण पत्र सुनोः-

'निमन्त्रण पत्र'

यह यज्ञ की सूचना हर एक सजन को अपने-अपने परिवारों में, शहरों में दे देनी है और उनको यज्ञ पर आने की गरिमा के बारे में भी बता देना है कि उनको क्या लाभ होने वाला है। ऐसा कोई सजन न रह जाये जिसको यह सन्देश न मिला हो। यज्ञ पर सबने जरूर आना है। अब प्रेम से खुशी के माहौल में आकर सुनोः-

प्रेम रस

प्रेम रस पी लै, पी लै
आनन्द नाल जी लै, जी लै
प्रेम रस पी लै, पी लै।

जेहड़ा वी प्रेम रस पीना चाहवे
उमड़-उमड़ के, उमड़ के, चैत्र दे यज्ञ ते आवे
प्रेम रस पी लै, पी लै।

जेहड़ा परिवारां नूं नाल ल्यावे
ओही ओन्हां दा सजन कहावे
प्रेम रस पी लै, पी लै।

प्रेम रस दा मोल न तोल
सजनों ए तां है अनमोल
प्रेम रस पी लै, पी लै।

प्रेम रस नाल मन होवे शांत
मिटें सब फुरने ते संताप
प्रेम रस पी लै, पी लै।

प्रेम रस पींदया प्रसन्नता आवे

हंगता-ममता सारी मिट जावे

प्रेम रस पी लै, पी लै।

प्रेम रस पीवे बने संतोषी

ओदे सारे सजन, कोई न विरोधी

प्रेम रस पी लै, पी लै।

प्रेम रस दे अधिकारी बनन लई

समभाव-समदृष्टि ते चलना ज़रूरी

प्रेम रस पी लै, पी लै।

प्रेम रस है औषधि अमृत्व दी, कोई विरला पराक्रमी खुशनसीब ही पीवे।

जेहड़ा प्रेम रस नाल खुद नूं सींचे ,उस सजन दी ही बुद्धि विवेकशील होवे।।

बुद्धि विवेक होंदिया ही, सत्य-धर्म दी राह ते प्रशस्त होवे।

फिर उस सजन लई, निष्कामता नाल पर उपकार करना सुगम होवे।।

अच्छा लगा है। इस बार यज्ञ पर बौद्धिक तौर पर आप सभी उन्नत्ति करो, समझदार बनो इस हेतु सबसे पहले बताया जायेगा कि जिस कुदरत ने इस जगत की रचना की, आप सबकी बनत बनाई, वह कुदरत क्या है? वह सब आपके लिए जानना आवश्यक है क्योंकि यह आत्मिकज्ञान का पहलू है। जब अपना यह सत्य जान लोगे तो सत्यनिष्ठा से जीवन जीने के योग्य बन जाओगे और सत्य से प्यार हो जायेगा। फिर आपको बताया जायेगा कि ईश्वर ने या कुदरत ने आपको मानव रूप में जो विशेष विवेकशक्ति प्रदान की है वह विवेकशक्ति क्या है ताकि आप सत्य और झूठ की पहचान चुटकी बजाते ही कर लो और केवल सत्य ही धारो और जो भी दिनचर्या है उसमें कदापि झूठ न धारो। जानो ऐसा करने से आपका मन-वचन-कर्म झूठ से स्वतन्त्र रह सत्यता का प्रतीक बना रह सकता है और आप

कामनामुक्त बने रह सकते हो। सजनों कामना बुद्धि को भ्रष्ट कर देती है, कामना इन्द्रियरस में फँसा देती है, अतः उसकी चुंगल में फँसने से बचने हेतु आपको विवेकशक्ति का अपने अन्दर पुनर्जागरण कैसे करना है उसके बारे में बताया जाएगा ताकि आप मुकम्मल तौर पर इन्सानियत में ढलकर मानव-धर्म अनुरूप निष्पाप जीवन जीने के काबिल बन जाओ।

सजनों इस श्रृंखला में आगे बढ़ते हुए अष्टमी और राम नवमी वाले दिन बताया जायेगा कि इस संसार की रचना जिस सर्व-शक्तिमान, सर्व-व्यापक व सर्वज्ञ परमात्मा ने की उस परमात्मा का सत्य क्या है क्योंकि जो समयकाल आने वाला है - सतयुग, उस युग में यह अनेक शासक नहीं होते और न ही कोई अलग-अलग देश होते हैं। सम्पूर्ण धरा भारत माता होती है अतः एक छत्र शासन होता है। अब वह एक छत्र शासन किसका होता है? -

जो संसार के पालनहारे शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी विष्णु भगवान जी हैं उनका होता है।

जी हाँ वही सतयुग में सबके हृदय में प्रकाशित रहते हैं। इसी कारण हर इन्सान आत्म-स्मृति में रहता है यानि यह भली-भान्ति जानता है कि मैं कौन हूँ और क्या करने आया हूँ। अब जो यह जानता है वह समयबद्ध कार्य पूर्ण करके अपने सच्चे घर लौट जाता है। फिर उसको पुनर्जन्म लेने की जरुरत नहीं होती। समझ आई बात?

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अगर आप अपने परिवारों के और मित्रों के सजन हो तो उन सबको चारों दिन लेकर आना अन्यथा मान लेना कि आप उनके दुश्मन हो। चारों दिन इसलिए क्योंकि यह सब कुछ एक कड़ी की तरह चलेगा। जानो कि अगर उन चार दिनों में वे यह सब सुनकर सुबुद्धि में आ जाते हैं तो आपका जो घर आज नरक समान बना हुआ है वह स्वर्ग बन जायेगा और आपका आगामी जीवन आनन्दमय व्यतीत होगा। अतः अगर आपने जीवन को आनन्दमय बनाना चाहते हो तो फिर चार दिन संसारी काम छोड़ देना, कोई संसारी काम नहीं करना, चाहे दुकान हो या अन्य कुछ भी हो, सब छुट्टी ले लेना।

आप सब अपने सजन बनने में कामयाब हो इन्हीं शुभकामनाओं सहित।